

**POST GRADUATE CERTIFICATE IN
BANGLA-HINDI TRANSLATION PROGRAMME
(PGCBHT)**

सत्रांत परीक्षा

जून, 2022

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

नोट: सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 – 300 शब्दों में दीजिए : $2 \times 10 = 20$
 - (a) बांग्ला और हिन्दी वाक्यों में मुहावरों के प्रयोग में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, सोदाहरण लिखिए।
 - (b) हिन्दी और बांग्ला की भाषिक विभिन्नताओं पर प्रकाश डालिए।
 - (c) हिन्दी और बांग्ला की सम एवं विषम सांस्कृतिक विभिन्नताओं का विवेचन कीजिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए :

5

- (a) ভাল
- (b) ডাল
- (c) খোঁটা
- (d) বাঁক
- (e) শুধু
- (f) ভরসা
- (g) জল
- (h) খুকি
- (i) উচাটন
- (j) ঝিনুক

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए :

5

- (a) ঝঁকা
- (b) রিশতা
- (c) নাপাক
- (d) নারাজ
- (e) আঁসু
- (f) গবাহ
- (g) বদলাচ
- (h) খিলাফ
- (i) চপ্পল
- (j) যাদ

4. निम्नलिखित हिन्दी मुहावरों में से किन्हीं पाँच के बांग्ला समतुल्य बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : $5 \times 3 = 15$
- (a) उँगली पर नचाना
 - (b) मुँह फुलाना
 - (c) राई का पहाड़ बनाना
 - (d) अँधेरे में तीर चलाना
 - (e) माटी हो जाना
 - (f) मुँह में खून लगना
 - (g) रास्ते का काँटा बनना
 - (h) आँखों का तारा होना
 - (i) आग-बबूला होना
 - (j) सीने पर पत्थर रखना
5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : $3 \times 15 = 45$
- (a) बिद्यार बहुविभीषण धारार सहित शिक्षित मनेर योगसाधन करिया दिवार जन्य इंरेजिते बहु ग्रहमाला रचित हईयाछे ओ हईतेछे । किन्तु बांग्ला भाषाय एरकम बई बेशि नाइ याहार साहाय्ये अनायासे केह ज्ञान-विज्ञानेर बिभिन्न बिभागेर सहित परिचित हईते पारेन । शिक्षापद्धतिर त्रुटि, मानसिक सচेतनतार अभाब वा अन्य ये-कोनो कारणेह हट्टुक, आमरा अनेकेह

স্বকীয় সংকীর্ণ শিক্ষার বাহিরের অধিকাংশ বিষয়ের সহিত সম্পূর্ণ অপরিচিত। বিশেষ, যাঁহারা কেবল বাংলা ভাষাই জানেন তাঁহাদের চিত্তানুশীলনের পথে বাধার অন্ত নাই, ইংরেজি ভাষায় অনধিকারী বলিয়া যুগশিক্ষার সহিত পরিচয়ের পথ তাঁহাদের নিকট রুক্ষ। আর যাঁহারা ইংরেজি জানেন, স্বভাবতই তাঁহারা ইংরেজি ভাষার দ্বারস্থ হন বলিয়া বাংলা সাহিত্যও সর্বাঙ্গীণ পূর্ণতা লাভ করিতে পারিতেছে না।

যুগশিক্ষার সহিত সাধারণ-মনের যোগসাধন বর্তমান যুগের একটি প্রধান কর্তব্য। বাংলা সাহিত্যকেও এই কর্তব্য পালনে পরাম্পুর্খ হইলে চলিবে না। তাই বিশ্বভারতী এই দারিদ্র্ব গ্রহণে ঋতী হইয়াছেন।

১৩৫০ সাল হইতে এ যাবৎ বিশ্ববিদ্যাসংগ্রহের মোট ১২১খানি পুস্তক প্রকাশিত হইয়াছে।

- (b) এখানে আসার পর প্রথম কয়দিন আকাশ অনেকটা পরিষ্কার ছিল বলে আমাদের মন্দ লাগছিল না। প্রতিদিনই সকালে বিকালে সকলে মিলে বেড়াতে যাওয়াই ছিল আমাদের কাজ। আমার ব্যতিক্রম মাঝে মাঝে হোত, কিন্তু মাষ্টারমশায় ও অন্যান্যদের তা হয়নি। শহরের দেশী পাড়ায়, বাজারে দূরে পাহাড়ের গাঁয়ে নানা

স্থান দেখে বেড়াতেন। কোন কোন দিন ফিরতে অনেক দেরি হয়ে যেতো। মাষ্টারমশায়ের বেড়ানো একটু অন্য রকমের। তিনি চলতে চলতে আশেপাশের গাছ, পাতা, ফুল, ফল, পাথর, বাড়ি দেখতে দেখতে এবং ভাল করে তদারক করতে করতে চলেন। তাঁর সঙ্গে থাকতো সব সময়ই ব্রহ্মদেশীয় একটি থলি, তার ভিতরে ছুরি, পেনসিল, ছবি আঁকবার সাদা কার্ড, চাইনিজ ইংকের একটি ছোট কৌটা, সঙ্গে একটি জাপানী তুলি, কিছু ওষুধ, টর্চ, ন্যাকড়া ইত্যাদি টুকিটাকি আরো কিছু। এবং হাতে তার প্রধান সহায় পাঁচ ফুট লম্বা পাকা বাঁশের লাঠিটি। তিনি কখনো ইয়োরোপের আর্টিস্টদের মত ছবি আঁকবো বলে বা সেই মন নিয়ে বেড়াতে যান না, তিনি কেবল দেখতে যান। এই দেখাই হোল তাঁর শিল্পীমনের মূল কথা। এ বিষয়ে একটু বিস্তারিত আলোচনা হয়তো নির্থক হবে না।

পূর্বেও মাষ্টারমশায়ের সঙ্গে নানা উপলক্ষে বহু স্থানে বহুবার ভ্রমণে বেরিয়েছি। প্রতি বৎসরেই পৌষ মাসে তিনি তাঁর ছাত্রছাত্রীদের ও অধ্যাপকদের সঙ্গে নিয়ে তাঁবু ও রান্না-খাওয়ার সরঞ্জামসহ দশ বার দিনের মত ভ্রমণে বেরিয়ে পড়েন।

(c) তার পর আর-কোনো চিঠি পাই নি ।

অনেক আগে, ধর্মপুর থেকে তার চিঠি পাবার
বছর দুই আগে, গোলদিঘিতে একদিন অবিনাশের
সাথে দেখা হয়েছিল । সেও এমনি শ্বাবণ মাস —
গিরি মাটির মত অজস্র মেঘে আকাশ ছিল ভরে
— কতকগুলো ধূমসো কাল মেঘ পঙ্গপালের মত
ইত্তেত ওড়াউড়ি করছিল; দিনের আলো যাচ্ছিল
নিভে; দাঁড়কাকগুলো আকাশের গায়ে-গায়ে
ইত্তেত মিলিয়ে যাচ্ছিল । ঘোলা সরবত্তের মত
মেঘের এক খণ্ডে বরফের দানার মত সগুমীর চাঁদ
বিকেল শেষ না-হতেই হাজির — তার নীচে
আসন্ন সন্ধ্যার অজস্র কালো বাদুড়ের দল ।

হাঁটছিলাম — হঠাত দিঘির উত্তর-পশ্চিম কোণের
থেকে কে যেন আমাকে ডাকল; আবছায়ার ভিতর
দিয়ে তাকিয়ে দেখলাম একটা মিলিটারি খাকির
শার্ট পরে অশ্বথ গাছের নীচের বেঞ্চিতে অবিনাশ
বসে আছে ।

সেদিন সারারাত ভরে মেঘের ... কিন্তু মন ...

অনেক রাতে আমরা স্কোয়ারের বেঞ্চি ছেড়ে
ফুটপথে নামলাম । হাঁটতে-হাঁটতে একবার
আমাহাস্ট স্ট্রিট, করিম চার্চ লেন — আর-একবার
মনুমেন্ট সেন্ট জনের গির্জা — এমনি করে সারাটা
রাত কাটালাম ।

কী-ই বা করবার ছিল আর ?

জীবন তখন একটা সমস্যার জিনিশ, প্রেমের বেদনা ও জর্জরতার অভিভ্যন্তা হয়েছে, কিন্তু বিচ্ছেদ ও প্রণয়ের গন্ধও যে জীবন থেকে একদিন নিঃশেষে কেটে যায় ! বঞ্চিত হলেও বেদনা থাকে না আর । উত্তরজীবনে মানুষের দুঃখ যে-অন্ধকষ্ট নিয়ে, নারীকে নিয়ে একেবারেই নয়, সে আশ্঵াস তখনো পাই নি ।

(d) ‘না বিজোড় হবে কেন ? এখানে মশাটশা আছে ?’
‘আছে ।’

‘মশারি আনি নি তো — ’

‘তা হলে ওপরে চলো । রাতে বেশ বাতাস খেলে সেখানে । মশারি না টানালেও চলে ।’

নিশীথ খাটের ওপর তোশক পেতে ফেলেছিল — একটা বালিশ খাটের এক কিনারে লক্ষ্যহীনভাবে ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে জিতেন দাশগুপ্তকে আশ্঵স্ত করতে-করতে বললে, ‘মশা তো আর বাঘ নয়, কলকাতা তো আর রায়গঞ্জ লক্ষণকাটি নয়, কটা মশাই-বা ফু ফু করবে, উড়বে এখানে । আমরা পদ্মার পারের দেশ থেকে এসেছি । পদ্মার ওপারে ফেলে এসেছি যে-সব, কলকাতায় সে-রকম জানোয়ার থাকে না ।’ বলতে-বলতে একটা সাদা পাতলা গায়ের চাদর বেশ করে একটু ঝেড়ে, প্রজাপতির মত ছোট সাদা পোকার মরা ডানা ও ডানার গুঁড়ি, উড়িয়ে নিশীথ বললে, ‘কাল তোমাকে সকালেই অফিসে যেতে হবে ?’

‘হ্যাঁ, সাতটাৰ সময় । উঠতে হবে পঁচটায় । দাঢ়ি
কামিয়ে ল্যাটিন সেৱে চান কৰে কফি, আলুভাজা
আৱ ডিমসেক খেয়ে বেৱিয়ে যেতে হবে —’ কফি
আলুভাজা আৱ ডিমসেক । ল্যাটিন সেৱে । কী
সব কথা জিতেন দাশগুপ্তেৰ মুখে । এ-ৱকম
ধৰনেৰ কথা, একটা আত্মাষ্টি জিতেনেৰ নাকে
চোখে : এসব কী দেখেছ শুনেছে আগে নিশীথ
যখন জিতেনেৰ এখানে আসত ?

‘কফি আলুভাজা আৱ ডিমসেক ?’

‘হ্যাঁ ।’

‘ৱোজ ।’

‘হ্যাঁ । যেদিনই সকাল-সকাল অফিস থাকে —’

‘ৱোজই আলুভাজা কেন দাশগুপ্ত সাহেব ?
ৱোজই ডিমসেক ?’

‘আমাৱ ভাল লাগে ।’

- (e) আষাঢ় শেষ হয়ে গেছে, শ্রাবণ চলছিল । এই
বৰ্ষায় বইয়েৰ বড় ক্ষতি হয় । কয়েক দিন আগে
স্টেশনেৰ বইগুলো দেখেছিলাম — স্টলেৰ সমস্ত
বইগুলোই প্ৰায় পুৱনো । ছেঁড়া-খোড়া মালিকেৰ
সঙ্গবিহীন গ্ৰন্থিহীন জীবনেৰ জৰ্জৱতাৰ অপৱাধ
এদেৱ চোখে মুখে । নতুন বইও কয়েকখানা
আছে । গত বছৰ কলকাতায় যখন পঁচিশ টাকা
টুইশান কৱি, টাম-সিনেমা ও চায়েৰ পথ এড়িয়ে,
খুব একটা শাদাসিংডে মেসেৱ জীবন্মৃত অবস্থাৱ
ভিতৰে থেকে কয়েকখানা বই কিনতে

পেরেছিলাম : ইংরেজি কবিতার বই দুটো, একখানা আমেরিকান উপন্যাস গত শতাব্দীর, একখানা নভেল এবং আরো দু-তিন খানা বই। ক্যাটেলগ দেখে কিনি নি; কারো পরামর্শ নিয়েও নয়; ইংরেজি পত্রিকাগুলোর সমালোচনা ও খবরাখবর আমি অনেক দিন ধরে দেখি নি; বই ক-খানা কিনেছিলাম নিজের মনের কর্তৃত্বে আমি। টিনের সুটকেসে করে বইগুলো দেশে নিয়ে এলাম; খড়ের ঘরের জানলার কাছে বসে পড়লাম; বাইরে বিকেলের আলোয় সন্ধ্যার অন্ধকারে কথনো শরৎ কথনো হেমন্তকে দেখেছি: শালিখ ঘাসে-ঘাসে পোকা খুঁটে খেয়েছে, ফড়িং উড়েছে, পাতা খসেছে, দাঁড়কাকের দল গভীর কীর্তির অব্যর্থতায় ঘরের দিকে উড়ে গেছে তাদের, সন্ধ্যামণির পাপড়ির মত লাল মেঘে আকাশ গেছে ছেয়ে।

6. নিম্নলিখিত মেঘে সে কিসি এক অনুচ্ছেদ কা বাঁচা মেঘে অনুবাদ কীজিএ : $1 \times 10 = 10$

- (a) শেরগিল নে আठ সাল কী উম্মে হংগারী সে ভারত আনে কে বাদ, ঔর ফ্লোরেন্স মেঘে অপনী কলা শিক্ষা অধূরী ছোড়নে কে বাদ কলা সাধনা নহোঁ ছোড়ী। উসকী প্রত্যেক কৃতি অদম্য উত্সাহ, অধ্যবসায় ঔর আকারিক সংযোজন কে কারণ ভারতীয় আধুনিকতা কী সাধ্য বনী হুই হৈ। ন কেবল চিত্রণ মেঘে বলিক তত্কালীন কলা বিমর্শ মেঘে ভাগ লেতে হুই উসনে অপনে

मित्र और सुप्रसिद्ध कलाविद् कार्ल खंडालावाला को लिखे पत्रों में बड़ी गहराई से उल्लिखित भी किया, जो उसने व्यावहारिक कला संबंधी अनुभवों के संदर्भ में अर्जित किया था।

अमृता शेरगिल के प्रारंभिक चित्रों पर निश्चय ही पश्चिमी कलाकारों का प्रभाव पड़ा। लेकिन जब उसे ‘भारत की फ्रीडा कहलो’ बताया गया तो हैरानी स्वाभाविक ही थी। उनकी एकाधिक पेंटिंग पर उस मेक्सिकन कलाकार की छाप और छाया है। अमृता की एक पेंटिंग पर फ्रीडा अंकित प्रतिकृति का स्पष्ट अनुकरण है। अपने एक चित्र ‘बस’ (1929) से अत्यधिक प्रसिद्ध फ्रीडा ने अपनी कृतियों को मेक्सिकन पहचान दी थी। यही आग्रह हमें अमृता के चित्रों में भी मिलता है, जिसने भारत आकर अपनी जड़ों को ढूँढ़ा और इसी से उसकी विशिष्ट पहचान बनी।

सुब्रमण्यन ने आधुनिक संवेदना और अंतर्दृष्टि के साथ चाक्षुष कला के लगभग हर क्षेत्र में अपना योगदान किया। उनकी प्रतिभा का उत्कर्ष पशुओं के रेखांकन तक में मिलता है। वे कीड़े पकड़ते मेंढक को भी उतनी दिलचस्पी से उतारते हैं, जितने कि बंदरों, कुत्तों, बकरियों और अन्य प्राणियों के क्रियाकलापों और मनोदशाओं को। उनकी असाधारण अंकन शैली अपनी रचनात्मकता में पर्याप्त मौलिकता लिए हुए है।

(b) मैं जब कॉलेज में विज्ञान की पढ़ाई पूरी कर रहा था तभी मैंने एच.जी. वेल्स की एक आश्चर्यजनक कहानी पढ़ी थी – ‘टाइम मशीन’। इसे पढ़ने के बाद, मेरे मन में इसी प्रकार का एक यंत्र तैयार करने की इच्छा जगी थी। इस इच्छा को मैंने कार्यरूप में परिणत भी किया था। लेकिन मेरा कार्य मुख्य रूप से एक सिद्धान्त की तरह ही विकसित हो रहा था। मेरी धारणा यह हो चली थी कि मेरे द्वारा विकसित सिद्धान्त की नींव काफी मजबूत थी। इस बात की पुष्टि तभी हो गयी थी जब पिछली फरवरी में, स्पेन के मेड्रिड शहर में आयोजित वैज्ञानिकों के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मैंने अपना शोधपूर्ण आलेख पढ़ा था। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने मेरी भरपूर प्रशंसा की। लेकिन मेरे पास इतना धन नहीं था कि मैं अपने खर्चीले प्रयोग जारी रख पाता। रुपये की कमी के चलते इस बीच मेरा काम आगे बढ़ नहीं पाया।

इसी बीच, जर्मनी के कोलोन शहर के वैज्ञानिक प्रो. क्लाइव अपनी टाइम मशीन को अंतिम रूप दे रहे थे। उनका काम काफी आगे बढ़ गया था, इसकी सूचना मुझे अपने जर्मन मित्र मि. विलहेम क्रोले से मिल चुकी थी। प्रो. क्लाइव मेड्रिड वाले सम्मेलन में भी उपस्थित थे, जहाँ मैंने अपना पर्चा पढ़ा था। वहीं उनके साथ काफी देर तक बातचीत भी हुई थी। दुख इस बात का है कि यह सारा काम पूरा किए जाने के पहले ही किसी हत्यारे ने उनकी हत्या कर दी। उस

हत्यारे का पता अब तक नहीं चल पाया है । इस घटना को बीते दो सप्ताह हो गए हैं । प्रो. क्लाइव पदार्थ विज्ञानी थे और काफ़ी सम्पन्न थे । विज्ञान के अलावा उनके और भी कई शौक थे । इनमें से एक था, कीमती और दुर्लभ कृतियों का संग्रह ।
